चित्रचन्द्रिका

अर्थात

विचित्र चित्रोंका अथाह सागर

जिसको

श्रीमत्परम प्रवीण कविकाशिराज महाराजने संस्कृत से आदिले अनेक ललित छन्दोंमें यथाविधि शोधके- अर्थ भाषा टीका सहित अपने हृद्गतउद्गारसे नायिका परस्पर सम्वाद वर्णन किया है.

दोबार लखनऊमें छपी थी अब (तीसरी बार)

मुंशी भगवानदयाल रोगन्के प्रबंधसे

कानपुर

मुंशीनवलकिशोर (सी. आई. ई.) के छापेखाने में छपी ॥
जून सन् १९०२ ई०